विचार बिन्दु

दया चरित्र को सुन्दर बनाती है। –जेम्स एलन

आयुर्वेद का इतिहास

आयुर्वेद चिकित्सा की एक प्राचीन प्रणाली है जो कम से 5,000 साल पहले भारत में उत्पन्न हुई। शब्द 'आयुर्वेद' का अर्थ जीवन का ज्ञान है। आयुर्वेद को प्रायः 'जीवन का विज्ञान' या 'जीने की कला' भी कहा जाता है। आयुर्वेद की उत्पत्ति और प्रारंभिक सूत्र वेदों में उपलब्ध हैं, जिनका काल 1500 ईसा पूर्व माना जाता है। वेदों में दर्शन, आध्यात्मिकता और चिकित्सा सहित विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला के बारे में जानकारी है। ऐसा माना जाता है कि आयुर्वेद के सिद्धांतों को सर्वप्रथम चार वेदों में से एक, अथर्ववेद, में रेखांकित किया गया था। समय के साथ, आयुर्वेद एक व्यापक स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के रूप में विकसित हुआ, जिसमें आहार, व्यायाम, ध्यान, उपचार और सर्जरी सहित स्वास्थ्य और कल्याण के सभी पहलुओं को शामिल किया गया। आयुर्वेदिक चिकित्सकों ने मानव शरीर की गहरी समझ विकसित की। साथ ही मानव शरीर और पर्यावरण के बीच परस्पर संबंध को भी व्यापक रूप से समझा। इस ज्ञान का उपयोग रोगियों के लिए व्यक्तिगत उपचार योजना विकसित करने के लिए किया।

आयुर्वेद भारत में हजारों वर्षों तक फलता-फूलता रहा, लेकिन औपनिवेशिक युग के दौरान इसे कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इस काल में पश्चिमी चिकित्सा स्वास्थ्य सेवा का प्रमुख रूप बनती गई। हालाँकि, हाल के वर्षों में, भारत और दुनिया भर में आयुर्वेद में नए सिरे से रुचि पैदा हुई है, और अब इसे एक मूल्यवान पूरक चिकित्सा के रूप में मान्यता प्राप्त है। आज, आयुर्वेद भारत में व्यापक रूप से प्रचलित है और दुनिया के अन्य हिस्सों में भी इसने लोकप्रियता हासिल की है। आयुर्वेद के सिद्धांत इस विचार पर आधारित हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है और उसका अपना व्यक्तिगत दोष संतुलन है। तीन मुख्य दोष हैं:– वात, पित्त और कफ। प्रत्येक दोष विशिष्ट विशेषताओं और असंतुलन से जुड़ा होता है, और आयुर्वेदिक चिकित्सक इस जानकारी का उपयोग बीमारियों के निदान और उपचार के लिए करते हैं। पश्चिमी चिकित्सा के विपरीत, जो लक्षणों के इलाज पर ध्यान केंद्रित करती है, आयुर्वेद का उद्देश्य बीमारी के मूल कारण को दूर करना और शरीर और दिमाग में संतुलन बहाल करना है।

हालाँकि आयुर्वेद का एक लंबा और समृद्ध इतिहास है, पर इसे विवादों में घसीटने का इतिहास भी कम लम्बा नहीं है। कुछ आलोचकों को आयुर्वेदिक उपचारों की सुरक्षा और प्रभावकारिता के बारे में चिंता लगी रहती है। इसके अतिरिक्त, दूषित आयुर्वेदिक उत्पादों के रोगियों को नुकसान पहुँचाने के बारे में भी अब बहुत प्रकाशन होता है। इन आलोचनाओं के बावजूद, आयुर्वेद चिकित्सा लोकप्रिय और कारगर है, और दुनिया भर के असंख्य लोगों ने आयुर्वेदिक उपचारों के माध्यम से उन रोगों से राहत पाई है जिन्हें आधुनिक चिकित्सा पद्धति ठीक नहीं कर पाती। समकालीन विश्व में जैसे-जैसे प्राकृतिक और पूर्ण स्वास्थ्य सेवा में रुचि बढ़ रही है, आयुर्वेद चिकित्सा की भूमिका भी बढ़ती जा रही है।

आयुर्वेद को मूल रूप से अथर्ववेद का उपवेद माना जाता है। इसका मूल कारण यह है कि अथर्ववेद में न केवल बहुत स्पष्ट रूप से चिकित्सा का वर्णन है, अपितु ऋग्वेद की तुलना में औषधियों की संख्या भी अधिक अंकित है। यह बात सत्य है कि ऋग्वेद का औषधि सूक्त आयुर्वेद का सबसे पुराना दस्तावेज है, किन्तु अथर्ववेद में भारतीय चिकित्सा पद्धति का तुलनात्मक रूप से अधिक प्रायोगिक विस्तार मिलता है।

आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति भारत की मूल्यवान और अनोखी धरोहर है। आयुर्वेद का उद्भव काल 6000 ई. पू. माना जाता है, पर मतभिन्नता के बावजूद इसे 5000 साल पुरानी चिकित्सा पद्धति तो माना ही जाता है। आयुर्वेद का सबसे पुराना उपलब्ध ग्रन्थ ई. पू. पांचवी शताब्दी में आचार्य चरक द्वारा लिखित चरक संहिता है। उसके पश्चात् सुश्रुत संहिता, अष्टांग हृदय, सारंगधर संहिता, माधव निदान, भावप्रकाश आदि ग्रन्थ लिखे गये। इनमें से चरक संहिता से प्रारंभ कर 15वीं शताब्दी में लिखित भावप्रकाश तक का समयकाल लगभग 2000 वर्ष का है। इस यात्रा में आचार्य नागार्जुन की रस औषधियों सहित तमाम रोचक नवाचार हुये जो आज भी आयुर्वेद चिकित्सा के माध्यम से लोगों के चेहरे पर मुस्कराहट ला रहे हैं।

संक्षेप में देखा जाये तो अथर्ववेद काल में चिकित्सा मुख्य रूप से देवताओं के ऊपर आश्रित मानी जाती थी, यही कारण है कि इस प्रकार की चिकित्सा को बाद में आयुर्वेद संहिता काल में दैव-व्यापाश्रय चिकित्सा के रूप में जाना गया है। अथर्ववेद काल की चिकित्सा में एक महत्वपूर्ण बात यह है कि एक रोग के लिए एक औषधि का प्रयोग ही दृष्टिगत होता है, किन्तु साथ ही उपचार मंव देवताओं, मंत्रों, पूजा-पाठ आदि अनिवार्य रूप से प्रयुक्त हुये।

अथर्ववेद परम्परा का कौशिक सूत्र इस परम्परा का अगला पड़ाव माना जाता है। कौशिक सूत्र मूलतः अथर्ववेद परम्परा का सूत्र है। अतः स्वाभाविक रूप से अथर्ववेद की चिकित्सा तथा औषधीय पौधों के संदर्भ और प्रक्रिया यथावत पायी जाती है। तथापि अथर्ववेद और कौशिक सूत्र दोनों में उपलब्ध चिकित्सा विवरण में कुछ मूलभूत अन्तर है।

जहां एक ओर अथर्ववेद में एक रोग के लिये एकल औषधि और साथ में पूजा-पाठ का विधान प्रयुक्त किया गया है, वहीं कौशिक सूत्र में पूजा-पाठ का विधान तो है परन्तु एकल औषधियों की जगह रोगों के लिये अनेक औषधियों के मिश्रण या योग का प्रयोग हुआ। दूसरा अंतर यह आया कि कौशिक सूत्र में ऐसी अनेक औषधियां वर्णित हैं, जिनका संदर्भ अथर्ववेद में नहीं मिलता है। इसका स्पष्ट तात्पर्य यह हुआ कि आयुर्वेद के विकास की यात्रा में अथर्ववेद एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, किन्तु बाद में रचित कौशिक सूत्र में नई औषधियों और रोगों के लिये नवाचारी योग जुड़ गये। हालांकि कौशिक सूत्र में भी स्पष्टतया पूजा-पाठ को चिकित्सा में उपयोग लेने की अथर्व परम्परा को तो यथावत दिया गया, परन्तु केवल पूजा-पाठ और एक औषधि की बजाय बहुत औषधियां योग देने का तात्पर्य यह लगाया जाता है कि पूजा-पाठ के साथ-साथ औषधियों को भी बराबर का महत्त्व दिया गया है। अथर्व परम्परा का कौशिक सूत्र निश्चित रूप से आयुर्वेद के विकास में एक मील का पत्थर है। परन्तु यह भी सही है कि चिकित्सा के मूल दर्शन के रूप में पूजा-पाठ आदि को कौशिक सूत्र में भी बराबर महत्व दिया गया है।

> **आयुर्वेद के सिद्धांत इस विचार पर आधारित हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है और उसका अपना व्यक्तिगत दोष संतुलन है। तीन मुख्य दोष हैं:– वात, पित्त और कफ। प्रत्येक दोष विशिष्ट विशेषताओं और असंतुलन से जुड़ा होता है, और आयुर्वेदिक चिकित्सक इस जानकारी का उपयोग बीमारियों के निदान और उपचार के लिए करते हैं।**

आगे चलकर संहिताकाल, जो लगभग 1000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर पहली शताब्दी तक माना जा सकता है, को आयुर्वेद का स्वर्णकाल कहा जाता है। एक अत्यन्त महत्वपूर्ण बात यह है कि संहिताकाल में उस समय तक चिकित्सा का जो भी ज्ञान वेदों, उपनिषदों, ब्राम्हणों या सूत्रों में उपलब्ध था, उस सम्पूर्ण ज्ञान को एकत्र कर संहिताकाल में आचार्यो ने जांच-परख कर और प्रत्यक्ष प्रायोगिक परीक्षण कर संहिताबद्ध किया। यही कारण है कि आयुर्वेद की मूल संहिताओं में चिकित्सा यर्थाततः युक्ति-व्यापाश्रय (प्रमाण-आधारित या रेशनेल मेडिसन) में बदल गई। इस प्रकार अंततः आयुर्वेद पूर्णतः वैज्ञानिक धरातल पर आ गया।

संहिताकाल का आयुर्वेद वांग्मय मूल रूप से चरकसंहिता और सुश्रुतसंहिता में उपलब्ध है। चरकसंहिता मूलतः कायचिकित्सा से संबंधित ग्रन्थ है, जबकि सुश्रुत संहिता मूलतः शल्यचिकित्सा से संबंधित है। दोनों में इस असमानता के बावजूद दोनों संहितायें प्रमाण-आधारित वैज्ञानिक दृष्टिकोण को ही प्रतिपादित करती हैं। इन संहिताओं में प्रमाण, कारण-कार्य प्रभाव, तर्क-संगतता आदि को उतना ही महत्व दिया गया है जितना कि आज के वैज्ञानिक शोध में दृष्टिगोचर होता है। यही कारण है कि पूरा विश्व आचार्य सुश्रुत को शल्य-चिकित्सा का जन्मदाता मानता है।

आचार्य सुश्रुत ने शल्य क्रिया के इतने विस्तृत सूत्र और विधियाँ लिखा कि उसमें कोई ऐसा कदम नहीं छूटा जिसे आज आधुनिक विज्ञान ने बिलकुल नये सिरे से खोजा हो। यहाँ तक कि शल्य क्रिया में प्रथक से काम आने वाले जो औजार जगह आचार्य सुश्रुत ने डिजाइन किये उसमें कोई बहुत बड़ा परिवर्तन आज भी नहीं आया है। लगभग समान औजार आज भी प्रयुक्त हो रहे हैं। आप यह कह सकते हैं कि इन औजारों के निर्माण के लिये आज बेहतर तकनीक तो उपलब्ध है, किन्तु उनके मूलभूत डिजाइन में कोई विषेष अन्तर नहीं आया है।

इस संक्षिप्त चर्चा से स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक काल से लेकर संहिता काल तक और संहिता काल से आज तक आयुर्वेद के विकास की एक बड़ी रोचक यात्रा रही है।

आधुनिक विज्ञान की दृष्टि से परखने पर चरक संहिता शरीर-विज्ञान, भ्रूणविज्ञान, फिजियोलॉजी, फार्माकोलॉजी, खाद्य एवं पोषण, पाचनतंत्र एवं पाचन-क्रियाविज्ञान, रक्त-परिसंचरण तंत्र, मानस-विज्ञान, रोग निदान-विज्ञान, प्रिवेंटिव कार्डियोलॉजी, मेडिको-बॉटनी, एवं कार्य-चिकित्सा जैसे अनेक विषयों का महत्वपूर्ण ग्रन्थ है।

आज विश्वभर के वैज्ञानिक अपने शोध-पत्रों के प्रकाशन में पूर्ववर्ती शोध का संदर्भ देते हैं, ठीक उसी प्रकार प्राचीन आयुर्वेदाचार्यों ने, समय और ज्ञान की लंबी यात्रा में उत्तरोत्तर, अपने पूर्ववर्ती विद्वानों की शोध का विवरण देते हुये आयुर्वेद को उत्तरोत्तर स्वयं के अनुभवों से परिष्कृत किया। चरक संहिता में वर्णित औषधीय पौधों की प्रजातियों की संख्या और उपयोगिता का वर्णन बाद के ग्रन्थों में निरंतर बढ़ता गया है। चरक संहिता में कुल 627 औषधीय पादपों को पहचाना जा सका है। सुश्रुत संहिता और अष्टांगहृदय सहित मुख्य ग्रंथों को मिलायें तो 1250 औषधीय पौधों का आयुर्वेद में अधिक उपयोग हो रहा है।

आचार्यों ने अपने पूववर्ती विद्वानों द्वारा बताई गई औषधियों पर प्रमाण-आधारित भरोसा किया। साथ ही, स्वस्थ व्यक्तियों के स्वास्थ्य की रक्षा और रोगियों की रुग्णता शान्त करने के लिये समय के साथ नई-नई औषधियों की खोज, या पूर्व से ज्ञात औषधियों के नवीन गुणों को पहचाना, परिभाषित किया और अपने ग्रन्थों में उल्लेख किया।

समय के साथ बढ़ती विशेषज्ञता भी बड़ी रोचक है। चरक संहिता में यद्दिप आयुर्वेद चिकित्सा के सभी अंगों को समाहित किया गया, परंतु मूल ध्यान काय-चिकित्सा और रसायन चिकित्सा की ओर ही रहा। आचार्य सुश्रुत ने आयुर्वेद के विभिन्न पहलुओं का विवरण दिया, परंतु सुश्रुत संहिता में विशेषज्ञता शल्यक्रिया में केन्द्रित रही। काश्यप संहिता बाल एवं महिला स्वास्थ्य पर केन्द्रित है। आचार्य चक्रदत्त ने एकल औषधि चिकित्सा पद्धित में विशेषज्ञता विकसित कर लिखा। इसी प्रकार पॉली-हर्बल या बहु-पादपीय औषधियों द्वारा चिकित्सा में आचार्य सारंगधर का कोई सानी नहीं है।

आयुर्वेद में आधुनिक वैज्ञानिक शोध हालाँकि अभी बहुत अधिक नहीं है, फिर भी स्कोपसडेटाबेस से ज्ञात होता है कि वर्ष 1923 से 2023 के दौरान प्रकाशित कुल 50,855 शोधपत्रों में कहीं न कहीं आयुर्वेद का उल्लेख हुआ है, उनमें से 13,589 शोधपत्र विशेषकर आयुर्वेद पर केन्द्रित हैं। इसके अतिरिक्त आयुर्वेद में प्रयुक्त औषधीय पौधों पर कम से कम दस लाख से अधिक शोधपत्र हैं। पिछले एक दशक के दौरान भारत के कई दिग्गज वैज्ञानिकों और आयुर्वेदाचार्यों की शोध ने आयुर्वेद का प्रमाण-आधार बहुत मजबूत किया है। आयुर्वेदिक बायोलॉजी, आयुर्वेदिक जीनोमिक्स, होल-सिस्टमक्लिनिकल ट्रायल्स आदि में उपयोगी कार्य हो रहा है। आधुनिक विज्ञान के समावेश से आयुर्वेद का और बेहतर उपयोग मानवता के कल्याणार्थ किया जा सकता है, परन्तु यह तभी संभव है जब वर्ष 1600 से 1947 के मध्य आयुर्वेद को दुर्बल करने के जितने भारी प्रयास हुये, उससे दुगने प्रयास अब इसे आगे बढ़ाने के लिये किये जायें।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)

(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

शोभायात्रा के साथ तीन दिवसीय थार महोत्सव का आगाज

- **फकीरा खां द्वारा राजस्थानी गीत आओ नी पधारो म्हारो देश ने शमा बांध दिया**
- **कैमल टैटू शो में बीएसएफ जवानों ने ऊंटों के साथ रौचक मुकाबलों का प्रदर्शन किया**

थार महोत्सव के शुभारम्भ अवसर पर सजे धजे ऊँट, हाथी, घोड़े के साथ शोभायात्रा निकाली गई।

बाड़मेर, (निसं)। जिले की लोक कला, संस्कृति, इतिहास, पर्यटन एवं हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिए जिला प्रशासन द्वारा आयोजित किये जाने वाले थार महोत्सव का शुभारम्भ शनिवार को भव्य शोभायात्रा के साथ हुआ।

राजस्थान गो सेवा आयोग के अध्यक्ष मेवाराम जैन, जिला प्रमुख महेंद्र चौधरी, जिला कलेक्टर लोकबंधु, नगर परिषद सभापति दिलीप माली, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ओमप्रकाश विश्नोई, अतिरिक्त जिला कलेक्टर सुरेंद्र सिंह पुरोहित, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नरपत सिंह ने हरी झंडी दिखाकर शोभा यात्रा को रवाना किया। शोभायात्रा में सभी विभागीय अधिकारी, जिला प्रशासन समेत कई गणमान्य नागरिकों ने भाग लिया। शोभायात्रा में सबसे आगे थार महोत्सव के बैनर के साथ कलाकार तथा उनके पीछे सीमा सुरक्षा बल के सजे धजे ऊँट, हाथी, घोड़े, बीएसएफ के बैण्ड दल, ढोल थाली एवं नगाडे बजाते स्थानीय एवं विभिन्न प्रान्तों से आये कलाकार एवं रंग बिरंगी पोशाकों में सिर पर मंगल कलश लिए महिलाएं एवं बालिकाएं चल रही थी। इसी प्रकार गैर दल, ऊँट गाड़ों पर सवार लोक कलाकार गाते बजाते चल रहे थे। शोभायात्रा का आम जन में खासा उत्साह देखा गया तथा जगह-जगह पुष्प वर्षा कर शोभा यात्रा का स्वागत किया गया। शोभायात्रा गांधी चौक, अहिंसा सर्किल एवं नेहरू नगर पुलिया होते हुए आदर्श स्टेडियम पहुंची।

शोभायात्रा के आदर्श स्टेडियम पहुंचने पर जिला कलेक्टर लोक बंधु ने थार महोत्सव के कार्यक्रमों का शुभारम्भ किया। इसके बाद विभिन्न रोचक प्रतियोगिताओं का सिलसिला शुरू हुआ।

फकीरा खां द्वारा राजस्थानी गीत आओ नी पधारो म्हारो देश ने शमा बांध दिया। कार्यक्रम की अगली कडी में कैमल टैटू शो आयोजित हुआ। जिसमें बीएसएफ जवानों द्वारा ऊंटों के साथ रोचक मुकाबलों का प्रदर्शन किया तथा दर्शकों का खूब मनोरंजन किया। साफा बांध प्रतियोगिता में जसवंत सिंह प्रथम स्थान पर रहे। संयुक्त परिवार के प्रतीक दादा-पोता दौड़ प्रतियोगिता में मूलाराम और उनके पोते महिपाल को प्रथम स्थान मिला। पति-पत्नी दौड़ प्रतियोगिता में हेमाराम व उनकी धर्मपत्नी मधु प्रथम स्थान पर रहे। पणिहारी मटका दौड़ प्रतियोगिता में चुंकी को प्रथम स्थान पर मिला। रस्साकसी प्रतियोगिता के पुरुष वर्ग के जिला प्रशासन टीम एवं महिला वर्ग में गोमती एंड टीम विजेता रही। विजेता रहे प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

अजमेर में तारागढ़ की पहाड़ियों पर दिखाई दिया पैंथर

अजमेर में तारागढ़ पहाड़ी के मेन रोड पर घूमता पैंथर।

अजमेर, (कासं)। आधुनिकता की दौड़ में समाप्त हुए जंगलों के चलते भूख और प्यास के कारण जानवर शहरों की रुख कर रहे हैं। आरावली की पहाडियों के बीच बसे अजमेर शहर के रिहायशी इलाकों सहित उपखंडों के कई क्षेत्रों में पैंथर की मूवमेंट लगातार देखने को मिल रही है, जिससे लोगों में दहशत व्याप्त है।

शुक्रवार देर रात भी तारागढ़ की पहाड़ियों पर पैंथर दिखाई दिया। पैंथर आबादी क्षेत्र से गुजर रहा था, इसी बीच वहां से बाइक पर जा रहे युवक के सामने आ गया और दहाड़ मारने लगा। यह देखकर बाइक सवार वहां भाग छूटा। युवक ने पैंथर की दहाड़ मारते हुए का वीडियो मोबाइल से बनाया लिया। शनिवार को सोशल मीडिया पर वायरल हुए वीडियो 17 मार्च की रात तारागढ़ की पहाड़ी पृथ्वीराज स्मारक मोड़ का बताया जा रहा है। वहीं लगातार एक ही क्षेत्र में पैंथर के मूवमेंट से क्षेत्रवासियों में दहशत का माहौल व्याप्त है। पैंथर की मूवमेंट की सूचना पर वन विभाग अलर्ट हो गया।

सोशल मीडिया पर वायरल हुए वीडियो में शुक्रवार देर रात करीब दस बजे बाइक पर सवार हो दो युवक तारागढ़ की तरफ जा रहे थे। इसी बीच पृथ्वीराज स्मारक मोड़ के आस-पास बाइक सवार युवकों को अंजाम भी नहीं था कि उनका इंतजार वहां बैठा पैंथर कर रहा है। जैसे ही बाइक सवार युवक आगे की तरफ बढ़े तो अचानक पेंथर सामने आ गया और दहाड़ मारने लगा। यह देखकर दोनों बाइक सवार युवकों घबरा गए और वहां भाग छूटे। इसी दौरान वहां से कार में सवार एक युवक ने पेंथर के दहाड़ मारते हुए का वीडियो बनाया लिया और इसकी सूचना वन विभाग के अधिकारियों को दी।

वन विभाग ने की लोगों से सतर्कता बरतने की अपील : वन विभाग के रेंजर देशराज ने बताया कि गर्मी बढ? के साथ ही जंगल खाने और पानी की व्यवस्था नहीं होने के कारण पेंथर रास्ता भटककर आबादी क्षेत्र की ओर रुख कर रहे हैं। तारागढ़ में भी इसी कारण से पिछले कई दिनों से लेपर्ड का मूवमेंट हो रहा है। तारागढ़ पहाड़ी और जंगल क्षेत्र है, पेंथर एक बार देखा गया था। स्थानीय लोगों को इसके बारे में पता चला तो वे दहशत में आग गए और पिंजरा लगाने की मांग की। उन्होंने बताया कि इस घटना के बाद लगातार गश्त की जा रही है। पिंजरा भी लगाया लेकिन अभी तक लेपर्ड का मूवमेंट नजर नहीं आया। उन्होंने लोगों से सतर्कता बरतने की अपील की है।

वन विभाग के रिटायर्ड अधिकारी ने बताया कि तारागढ़ रोड पर देर रात तक स्थानीय लोगों के साथ ही जायरीनों की आवाजाही लगी रहती है। ऐसे में अगर पैंथर किसी पर हमला कर देगा तो उससे काफी नुकसान हो सकता है।

मगरा क्षेत्र बन रहा है असुरक्षित जोन : वन विभाग के अधिकारियों का कहना है कि मगरा क्षेत्र पेंथर के लिए अब असुरक्षित जोन बनता जा रहा है। टॉडगढ़-रावली से जुड़ी ब्यावर रेंज करीब दस हजार हैक्टेयर में फैली हुई है। इस क्षेत्र में खनन सहित अन्य हस्तक्षेप के बाद वन्य जीव पर संकट मंडरा रहा है। कुंभलगढ़ अभ्यारण्य से टॉडगढ़-रावली अभ्यारण्य जुड़ा हुआ है। करीब दौ सौ किमी की इस क्षेत्र में कई वन्य जीव विचरण करते है। रावली अभ्यारण्य से निकलकर यह पेंथर जैसे ही ब्यावर पुष्कर व अजमेर की सीमा में प्रवेश करते है, इससे संकट शुरू हो जाता है। जंगल की चौड़ाई महज चालीस से पचास किलोमीटर तक रह जाती है। इसके बीच में कई स्थान पर अवैध खनन हो रहा है। इसके चलते पेंथर सहित अन्य वन्य जीव भटककर आबादी क्षेत्र की ओर रुख कर रहे हैं।

96 स्कूल प्राइमरी से अपर प्राइमरी में क्रमोन्नत

- **अब राज्य के इन नए अपर प्राइमरी स्कूल में कक्षा छह शुरू हो सकेगी**
- **माध्यमिक शिक्षा निदेशक ने जारी किये आदेश**

बीकानेर, (निसं)। शिक्षा विभाग ने प्रदेश के 96 प्राइमरी स्कूल्स को अपर प्राइमरी स्कूल में प्रमोट कर दिया है। अब राज्य के इन नए अपर प्राइमरी स्कूल में कक्षा छह शुरू हो सकेगी। अगर स्टूडेंट्स की संख्या ज्यादा होगी तो कक्षा सात व आठ भी इसी साल शुरू कर दी जाएगी।

माध्यमिक शिक्षा निदेशक गौरव अग्रवाल की ओर से जारी आदेश में राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में क्रमोन्नत करने की स्वीकृति दी गई है। नए प्रमोटेड स्कूल्स नए सेशन 2022-23 से शुरू होंगे। क्रमोन्नत विद्यालय में प्रारम्भ में कक्षा 6 संचालित की जायेगी, लेकिन पर्याप्त नामांकन होने पर कक्षा 7 व 8 भी साथ ही प्रारम्भ की जा सकेगी। क्रमोन्नत स्कूल में पदों का आवंटन विभाग में उपलब्ध आरक्षित पदों में से स्टाफिंग पैटर्न के आधार पर किया जाएगा। इन विद्यालयों में कमरों का निर्माण समग्र शिक्षा अभियान, नाबार्ड, एमपीएलएडी अथवा जन सहयोग के माध्यम से कराया जावेगा। क्रमोन्नत विद्यालय में शिक्षण कार्य प्रारम्भ करने के लिए सम्बन्धित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी अपने एरिया के प्राइमरी व अपर प्राइमरी स्कूल से लगेंगे। जहां नामांकन की अपेक्षा कार्यरत शिक्षकों की संख्या अधिक है, उन विद्यालयों से अध्यापक (1-2) के 03 शिक्षक (नामांकन के आधार पर) लगाये जाएंगे।

अजमेर में एक, अलवर में दो, बांसवाड़ा में एक, बारां में एक, बाडमेर में तीन, भरतपुर में पांच, भीलवाड़ा में तीन, बीकानेर में चार, बूंदी में दो, चित्तौड़गढ़ में दो, चूरू में दो, दौसा में एक, धोलपुर में एक, डूंगरपुर में दो, हनुमानगढ़ में दो, जयपुर में सात, जैसलमेर में चार, जालोर में दो, झालावाड़ में एक, झुझुनूं में छह, जोधपुर में ग्यारह, करौली में पांच, कोटा में एक, नागौर में तीन, पाली में दो, प्रतापगढ़ में दो, राजसमंद में तीन, सवाई माधोपुर में एक, सीकर में छह, सिरोही में एक, टोंक में चार व उदयपुर में दो स्कूल प्राइमरी से अपर प्राइमरी में प्रमोट हुए हैं।

राशिफल रविवार 19 मार्च, 2023

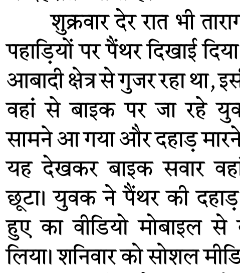

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2079, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 10:04 तक, सिद्ध योग रात्रि 8:06 तक, तैतिल करण प्रातः 8:08 तक, चन्द्रमा आज दिन 11:17 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मीन, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरू-मीन, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से प्रातः 8:08 तक है। द्विपुष्कर योग प्रातः 8:08 तक है। भद्रा रात्रि 4:56 से सोमवार दिन 3:22 तक है। आज प्रदोष व्रत है। त्रयोदशी तिथि का क्षय हुआ है। पंचक दिन 11:17 से आरम्भ होंगे।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 8:06 से 9:36 तक, लाभ अमृत 9:31 से 12:35 तक, शुभ 2:04 से 3:34 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:35, सूर्यास्त 6:34

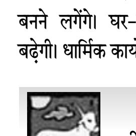

मेष
अपने आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

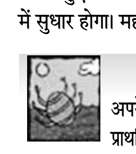

मिथुन
नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। महत्वपूर्ण कार्य बनने लगेंगे।

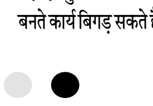

कर्क
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम भाव में चन्द्र शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

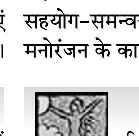

सिंह
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बढ़ेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। आज परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

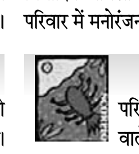

तुला
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

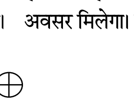

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

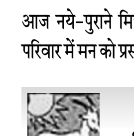

धनु
परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। मित्रों परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

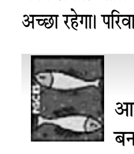

कुंभ
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

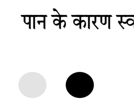

मीन
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।